लॉक (Locke) – इंद्रियानुभववाद

अनुभववाद– वह ज्ञानमीमांसीय सिद्धांत है जिसके अनुसार यथार्थ ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र स्रोत बुद्धि न होकर अनुभव है।

* लॉक, बर्कले, ह्यूम तीनों ब्रिटिश अनुभववादी दार्शनिक हैं।

लॉक

- ज्ञान का सिद्धांत,
- द्रव्य एवं गुण,
- आत्मा और परमात्मा
- संशयवाद का बीज लॉक के दर्शन में ही छुपा हुआ है।

बर्कले

- द्रव्य और गुण,
- आत्मा एवं परमात्मा।
- "Esse est percipi" "सत्ता दृश्यता है"
  ↓
  "To be is to be perceived".

ह्यूम

- ज्ञान का सिद्धांत,
- द्रव्य एवं गुण,
- आत्मा एवं परमात्मा,
- संशयवाद।

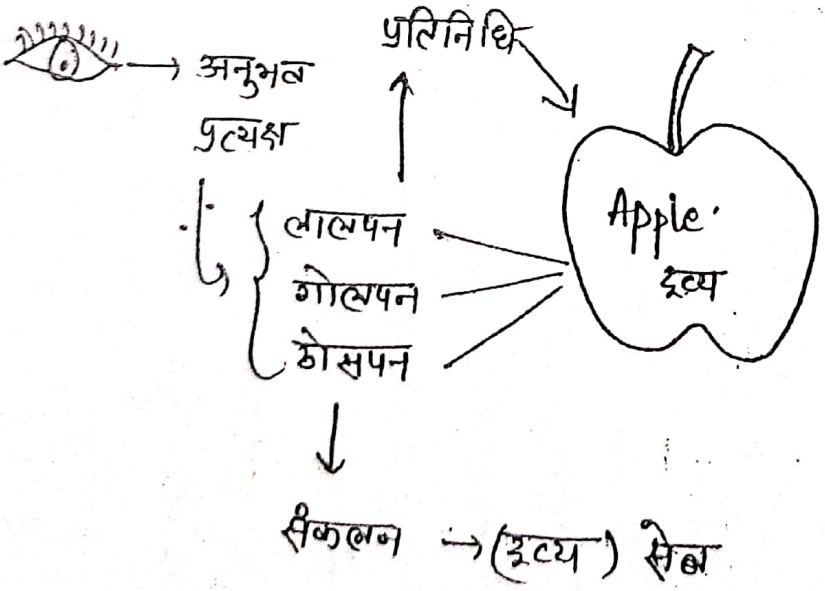

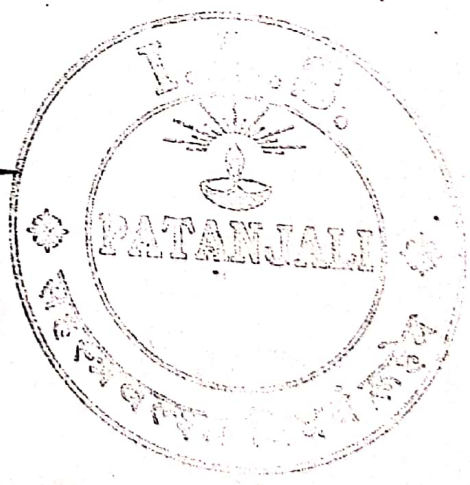

PATANJALI

मार्ग
↓
अनुभववाद → ज्ञाता (आत्मा) → ज्ञान → जड़ पदार्थ/वस्तु ज्ञेय (वस्तु)
↓
लॉक

अनुभववाद
↓
ज्ञान प्रक्रिया

ज्ञान
↓
गुणों का ज्ञान
↓
प्रत्यय के रूप में
↓
ज्ञान के साक्षात विषय

ज्ञान का त्रिपक्षीय सिद्धांत
↓
ज्ञाता - वस्तु - प्रत्यय
(ज्ञेय)

प्रतिनिधिमूलक वस्तुवाद
↓
प्रत्यक्ष ज्ञानमीमांसीय द्वैतवाद
प्रत्यक्ष प्रत्यय — अनुमान वस्तु

जड़ पदार्थ/वस्तु ज्ञेय (वस्तु)
↓ प्राथमिक गुणों के
• प्रत्यक्षित प्राथमिक गुणों के आधार के रूप में बाह्य वस्तु या जड़ द्रव्य की सत्ता को अनुमानित किया गया है।

• जब प्रत्यय के अनुरूप बाह्य वस्तु होती है तो वह ज्ञान सत्य अन्यथा असत्य हो जाएँगे
↓
इस रूप में लॉक संवादिता सिद्धांत को स्वीकार करते हैं।

यहाँ प्राथमिक गुणों के प्रत्ययों को बाह्य वस्तु का प्रतिनिधि माना गया है।

गौण गुण
* आत्मनिष्ठ
* परिवर्तनशील
* इन्हें हमारी आत्मा उत्पन्न नहीं करती बल्कि प्राथमिक गुणों द्वारा ये हमारी आत्मा में उत्पन्न किये जाते हैं।
* गौण गुणों के आधार के रूप में आत्मा की सत्ता सिद्ध।
* स्वाद, गंध आदि।

प्राथमिक गुण
* वस्तुनिष्ठ
* वास्तव में वस्तु में निहित
* अस्तित्व हमारे मन पर निर्भर नहीं
* अपरिवर्तनशील
* द्रव्य के वास्तविक एवं अवियोज्य गुण
• 6 प्राथमिक गुण - ठोसपन, आकृति, विस्तार, गति, स्थिति एवं संख्या।
* प्राथमिक गुणों के आधार के रूप में जड़ द्रव्य की सत्ता सिद्ध।

बर्कले

↓

ह्यूम

↓

संशयवाद

आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद
ज्ञान द्विपक्षीय सिद्धांत ज्ञाता / ज्ञेय

ज्ञानमीमांसीय
एकत्ववाद
↓
ज्ञान का केवल 1 विषय
"प्रत्यय"
साक्षात्- अनुभव द्वारा

प्राथमिक गुण एवं गौण गुण के भेद का खंडन :-

* दोनो अंतः संबंधित है
* अविभोज्य है (पृथक् नही कर सकते)
  जैसे - स्पर्श को विस्तार से अलग नहीं कर सकते।
* दोनो अनुभवगम्य हैं।
* दोनो परिवर्तनशील हैं। जैसे - एक ही जहाज दूर से छोटा व नजदीक से बड़ा आकार।
* समजातीय हैं।
* मानसिक या आत्मनिष्ठ हैं।
* वस्तुतः सभी गुण गौण गुण ही हैं क्योंकि सभी आत्मनिष्ठ हैं। अतः किसी गुण को प्राथमिक गुण कहना उचित नहीं है, ऐसी स्थिति में प्राथमिक गुणों के आधार के रूप में जड़ द्रव्य की ~~सत्यता~~ सत्ता को मानने का कोई औचित्य नहीं है।

ज्ञाता
↓
आत्मा ← सत्ता

बर्कले कथन - "पहले हम धूल उड़ाते हैं और फिर कहते हैं कि हमें कुछ दिखाई नहीं देता।"
प्रत्यय ही अनुभव के साक्षात् विषय अर्थात् ज्ञेय हैं।

लॉक की ज्ञानमीमांसा

↓

दो पक्ष

खंडनात्मक पक्ष	मंडनात्मक पक्ष
जन्मजात प्रत्ययों या सहजात प्रत्ययों की अवधारणा का खंडन	- यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति का स्रोत - ज्ञान का स्वरूप - ज्ञान की सीमा एवं प्रमाणिकता - ज्ञान के प्रकार - ज्ञाता - ज्ञेय संबंध

क्या है?- ऐसे प्रत्यय जिन्हे जन्म से ही मस्तिष्क में विद्यमान माना जाता है।

कौन मानता है?- डेकार्ट, स्पिनोजा, लाइबनित्ज आदि।

क्यों मानते हैं?- निश्चित और असंदिग्ध ज्ञान की व्याख्या हेतु

कैसे खंडन?- Printed Notes (लॉक द्वारा खंडन)

- जन्मजात प्रत्यय सबके मस्तिष्क में नहीं।
- ज्ञानार्जन की प्रक्रिया व्यर्थ।
- कोई भी प्रत्यय सार्वभौम नहीं।
- तार्किक प्रत्यय भी जन्मजात नहीं।

खंडन के बाद स्थिति -

- मन कोरी पटिया (Tabula rasa) के समान है।
- जन्म से कोई भी ज्ञान मस्तिष्क में नहीं। सारा ज्ञान अर्जित ज्ञान है।
-

Scanned with CamScanner

लॉक की ज्ञानमीमांसा

↓

ज्ञानमीमांसा प्राथमिक

↓

अनुभववादी दार्शनिक - अनुभव ही ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र यथार्थ स्रोत।

(Sensation) संवेदन

जब इंद्रियों का बाह्य वस्तु के साथ संपर्क हो फिर हमें उस वस्तु की संवेदना प्राप्त होती है।

इंद्रिय + वस्तु = संवेदन

स्वसंवेदन (Reflection)

आंतरिक दशाओं के प्रत्यक्षीकरण से स्वसंवेदना की प्राप्ति हो जाती है।

अनुभव

↓

प्रत्यय - संवेदन एवं स्वसंवेदन से अनुभव हमें प्रत्यय के रूप में प्राप्त होता है।

- प्रत्यय ही विचार एवं बोध के साक्षात विषय हैं।
- प्रत्यय ज्ञाता और वस्तु को जोड़ने का साक्षात माध्यम है।
- प्रत्यय के अनुरूप वस्तु के रहने पर ज्ञान की सत्यता निर्धारित होती है (संवादिता सिद्धांत)

प्रत्यय

सरल प्रत्यय

* ज्ञान के मूल निर्मायक तत्व
* सरल, निरवयव, अविश्लेष्य
* इनकी प्राप्ति के समय मन निष्क्रीय
* चार प्रकार - 1) एक इंद्रिय से प्राप्त - गंध
2) एक से अधिक इंद्रिय प्राप्त सरल प्रत्यय - विस्तार
3) संवेदन एवं स्वसंवेदन प्राप्त सरल प्रत्यय - सुख-दुख
4) स्वसंवेदन प्राप्त सरल प्रत्यय - संकल्प इच्छा etc

जटिल प्रत्यय (मन सक्रिय)

* सरल प्रत्ययों की प्राप्ति के पश्चात मन सक्रिय होकर जटिल प्रत्ययों का निर्माण करता है। इस निर्माण की प्रक्रिया के 6 चरण हैं:-

Scanned with CamScanner

6 चरण – 1) प्रत्यक्षीकरण 2) धारणा 3) पृथक्कीकरण

4) तुलना 5) संयोजन 6) अमूर्तीकरण एवं नामकरण

↓

यह मनुष्यो की विशेषता है जिसके आधार पर उसे पशुओं से भिन्न किया जाता है।

↓

किसी वस्तु विशेष के सारतत्व को उससे पृथक् कर उसे नाम देना ही अमूर्तीकरण एवं नामकरण है।

जटिल प्रत्यय

↓

तीन प्रकार हैं

- जगत पर्याय
- ईश्वर / द्रव्य
- सबंध

द्रव्य →

- आत्मा – अतःप्रज्ञात्मक ज्ञान (Intuitive Knowl.)
- ईश्वर – निदर्शनात्मक ज्ञान
- जगत – संवेदनात्मक ज्ञान

द्रव्य → **गुण**

गुण →

प्राथमिक गुण

- वास्तुनिष्ठ, वास्तव में वस्तु में निहित
- मन द्वारा आरोपित नहीं
- अपरिवर्तनशील
- उदा॰ ठोसपन, आकृति, विस्तार, गति, स्थिति और संख्या, ये द्रव्य के वास्तविक एवं अवियोज्य गुण हैं।
- इनका साक्षात ज्ञान होता है
- इनके आधार पर ही जड़ द्रव्य की सत्ता का अनुमान किया जाता है।

गौण गुण

- आत्मनिष्ठ
- परिवर्तनशील
  इन्हें हमारी आत्मा उत्पन्न नहीं करती बल्कि प्राथमिक गुणों के द्वारा ये हमारी आत्मा में उत्पन्न किये जाते हैं।
  जैसे – स्वाद, गंध, आदि।
- गौण गुणो के आधार के रूप में यहाँ आत्मा की सत्ता को माना गया है।

Scanned with CamScanner

लॉक की ज्ञानमीमांसा - संक्षेप में

1) यथार्थ ज्ञान प्राप्ति का साधन - अनुभव → संवेदन / → स्वसंवेदन

2) ज्ञान का स्वरूप - अनुभव हमें प्रत्यय के रूप में प्राप्त।

3) ज्ञान की सीमा - उसी की सत्ता स्वीकार जो अनुभव से संबंधित हो।

4) ज्ञान का प्रकार - संवेदनात्मक ज्ञान, निदर्शनात्मक ज्ञान व अंत: प्रज्ञात्मक ज्ञान।

5) ज्ञान की प्रमाणिकता - संवादिता सिद्धांत

6) ज्ञाता - ज्ञेय सबंध - प्रतिनिधिमूलक वस्तुवाद

लॉक के दर्शन में द्रव्य विचार

विचार अनुरूप
↓
वस्तु
↓
वस्तु अनुरूप
↓
विचार
↓
संवादिता सिद्धांत

लॉक अनुभववादी दार्शनिक हैं वह अनुभव को ही ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र यथार्थ स्रोत मानते हैं। अनुभव में ही हमें गुणों का ज्ञान प्राप्त होता है। इन गुणों का कोई न कोई आधार अवश्य होना चाहिए। लॉक ने गुण के आधार के रूप मे द्रव्य को स्वीकार किया है।

द्रव्य का प्रत्यय एक जटिल प्रत्यय है जिसे बुद्धि सरल प्रत्ययों की प्राप्ति के पश्चात सक्रिय होकर प्राप्त करती है। जैसे - स्वर्ण एक द्रव्य है जो जटिल प्रत्यय है, यह ठोसपन, चमकीलापन, पीलापन आदि का आधार है। ~~हमारा स~~।

हमारा साक्षात ज्ञान द्रव्य का नहीं होता बल्कि द्रव्य के गुणों का ज्ञान प्राप्त होता है। इन प्रत्यक्षित गुणों के आधार के रूप में ही द्रव्य की सत्ता को अनुमानित किया जाता है। इस प्रकार लॉक का यह मत "प्रतिनिधिमूलक वस्तुवाद" कहलाता है। भारतीय दर्शन में सैत्रांतिक सम्प्रदाय भी वाह्य वस्तु का ज्ञान प्रत्यक्ष से न मानकर अनुमान से मानता है।

द्रव्य के संदर्भ में लॉक का कथन है कि-
"द्रव्य की सत्ता तो आवश्यक है परंतु मैं नहीं जानता वह क्या है"
" ~~There is something~~ Something everywhere but I Know not what"
लॉक ने ज्ञात गुणों के अज्ञात आधार के रूप में द्रव्य की सत्ता को स्वीकार किया है।

लॉक बाह्य जड़ वस्तु की सत्ता को प्राथमिक गुणों के आधार के रूप में स्वीकार करते हैं। इनके अनुसार प्राथमिक गुणों के प्रत्ययों का कारण जड़ द्रव्य है। इस रूप में यहाँ प्रत्ययों के बाह्य आधार के रूप में द्रव्य की सत्ता मानी गई है। जैसे यदि कोई मनुष्य नेत्रहीन हो तो फिर उसे रूप, रंग आदि की संवेदना प्राप्त नहीं हो सकती। पुनः यदि बाह्य वस्तुओं का अस्तित्व नहीं होता तो फिर संवेदना और स्वसंवेदना में भी अंतर नहीं हो पाता।

बाह्य वस्तुओं की सत्ता विभिन्न इंद्रियों से भी सिद्ध होती है Ex- मैं मेज को देख सकता हूँ और स्पर्श करके भी उसका ज्ञान प्राप्त कर सकता हूँ।

लॉक के दर्शन में दो प्रकार के द्रव्य माने गये हैं:-
1) जड़ द्रव्य - जगत में जितनी वस्तुएं हैं।
2) अध्यात्मिक द्रव्य - आत्मा और ईश्वर।

लॉक मतानुसार भौतिक द्रव्य भौतिक गुणों का आश्रय है। आत्मा मानसिक गुणों का आश्रय है जबकि ईश्वर संपूर्ण विश्व का आश्रय है।

1) भौतिक द्रव्य
2) आत्म द्रव्य
3) ईश्वर द्रव्य
} Printed Notes

Scanned with CamScanner